14.07.2020

बी० ए० - खण्ड - I
अर्थशास्त्र (प्र०) - प्रथम पत्र
आर्थिक सिद्धान्त

डॉ० विपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा
पी० पी० यू०, पटना

प्रश्न : माँग की कीमत लोच का प्रकार एवं माँग की लोच को प्रभावित करने वाले कारकों (कारणों) को बतावें। (What is Price Elasticity of Demand and factors (Causes) affecting elasticity of Demand).

उत्तर : वस्तु की माँग में परिवर्तन की गति इसकी कीमत में परिवर्तन की गति की अपेक्षा तेज या धीमी हो सकती है। इस प्रकार विभिन्न वस्तुओं की लोच विभिन्न प्रकार की हो सकती है। माँग की कीमत लोच मुख्यतया पाँच प्रकार के होते हैं :-

① **पूर्णतया बेलोचदार माँग (Perfectly Inelastic Demand) :** जब किसी वस्तु की माँग में कीमत में परिवर्तन की तुलना में कोई परिवर्तन नहीं हो पाता है -- तब उसे पूर्णतया बेलोचदार माँग कहा जाता है। ऐसा मुख्यतया दैनिक जरूरतों की वस्तुओं एवं दवाइयों की माँग पर होता है। जिनका मूल्य कितना भी है, वह जरूरी होती है, इसलिए खरीदनी पड़ती है। बीमारी ठीक हो जाए तो हम बिना जरूरत उसे खरीद नहीं सकते -- इस प्रकार इस माँग का माप शून्य के बराबर होता है अर्थात् $E_D = 0$ होता है। इसे निम्नलिखित रेखाचित्र संख्या - 1 के द्वारा दर्शाया गया है :

इस रेखाचित्र सं० - 1 में, OX = माँग की मात्रा, OY = मूल्य रेखा, DD = माँग रेखा।

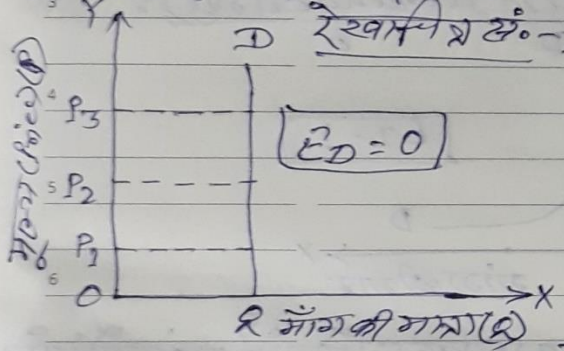

रेखाचित्र सं० - 1 से यह स्पष्ट है कि यहाँ मूल्य में बदलाव देखा जा रहा है -- लेकिन माँग की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं आ रहा है। अतः यहाँ माँग वक्र (OY) अक्ष के बिल्कुल समानान्तर होगा कारण कि केवल मूल्य में वृद्धि हो रही है। यहाँ माँग की मात्रा अपरिवर्तित है।

② **बेलोचदार माँग (Inelastic Demand) :** जब वस्तु की माँग की मात्रा में आनुपातिक बदलाव कीमत में बदलाव से कम होती है तो ऐसी परिस्थिति में उसे बेलोचदार माँग कहा जाता है। ऐसी माँग जीवन की आवश्यकता वाली वस्तुएँ यथा, भोजन, ईंधन जैसी चीजों में देखी जाती हैं। जब इनकी कीमत में परिवर्तन आता है तो माँग की मात्रा भी कुछ हद तक परिवर्तित हो जाती है। इसमें माँग की लोच की माप शून्य से ज्यादा एवं कम - से - कम होता है। अर्थात्
$E_D > 0$ एवं
$E_D < 1$ होता है। इसे निम्नलिखित रेखाचित्र संख्या - 2, में दर्शाया गया है :-

रेखाचित्र संख्या-2

बेलोचदार माँग वक्र (Inelastic Demand curve)

रेखाचित्र संख्या-2 में यह स्पष्ट है कि माँग वक्र थोड़ा सा झुका हुआ है। इसका अर्थ यह हुआ कि मूल्य में बड़े परिवर्तन के बावजूद माँग में थोड़ा परिवर्तन या माँग की मात्रा का आनुपातिक परिवर्तन मूल्य के आनुपातिक परिवर्तन से कम होगा।

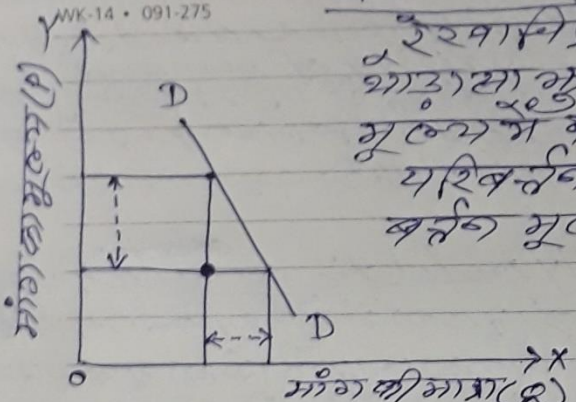

(3) **इकाई लोचदार माँग (Unity Elastic Demand):** जब माँग का आनुपातिक परिवर्तन उस वस्तु की कीमत की आनुपातिक परिवर्तन के बराबर होता है तो ऐसी स्थिति में वह इकाई लोचदार माँग कहलाती है। ऐसी माँग सामान्यतया, साधारण या सामान्य वस्तुओं में पायी जाती है। ऐसे में माँग की लोच का माप 1 के बराबर $E_D = 1$ होता है। इसे रेखाचित्र संख्या-3 में दर्शाया गया है।

इकाई लोचदार माँग का वक्र (Unity Elastic Demand curve):

रेखाचित्र सं.-3 में, OX = मांग की मात्रा, OY = मूल्य (कीमत) की मात्रा और DD = माँग वक्र। इस रेखाचित्र संख्या-3 में यह स्पष्ट है कि यहाँ हमें माँग माप इकाई के बराबर है जिसका सामान्य सा अर्थ यह हुआ कि माँग एवं मूल्य में आनुपातिक परिवर्तन बराबर होता है। इसलिए यह वक्र ऊपर से नीचे की तरफ झुकावदार होता है एवं इसमें प्रत्येक बिन्दु पर माँग एवं मूल्य में आनुपातिक बदलाव समान सा है।

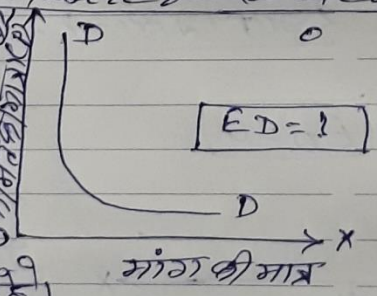

(4) **लोचदार माँग (Elastic Demand):** जब माँग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन कीमत की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन की तुलना में अधिक होता है तो ऐसी स्थिति में उस वस्तु की मांग लोचदार कहलाती है। ऐसी माँग प्रायः विलासिता की वस्तुओं जैसे मोटरकार, आभूषण इत्यादि में देखी जाती है क्योंकि उनकी कीमत गिरने पर ज्यादा-से-ज्यादा लोग इन्हें खरीदने लगते हैं। इसे रेखाचित्र संख्या-4 में दर्शाया गया है:

रेखाचित्र संख्या-4

लोचदार

P.3

रेखाचित्र संख्या - 4

लोचदार माँग का वक्र (Elastic demand curve)

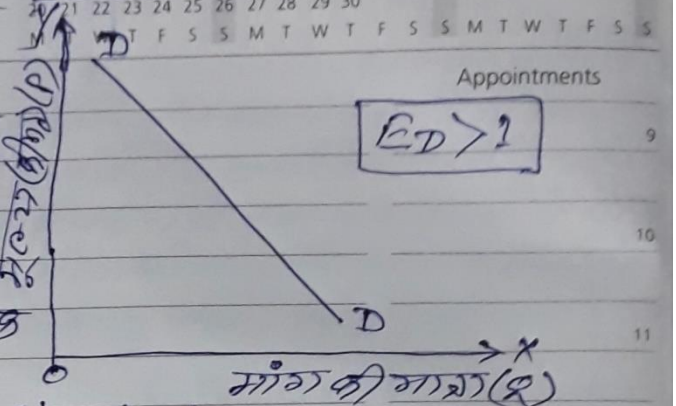

रेखाचित्र संख्या-4 से यह स्पष्ट है कि यहाँ लोचदार माँग का वक्र है। यह बेलोचदार माँग के वक्र की तुलना में थोड़ा अधिक झुक रहा है कारण कि मूल्य में परिवर्तन की तुलना में इसकी माँग में अधिक बदलाव पाया जा रहा है।

5] पूर्णतया लोचदार माँग (Perfectly Elastic demand):

जब किसी वस्तु की कीमत अपरिवर्तित रहती है एवं इसी स्थिति में उसकी माँग में बहुत तेजी या कमी होती है तो इस माँग को पूर्णतया लोचदार माँग कहा जाता है। ऐसी माँग प्रमुखतया पूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में पायी जाती है। इसमें माँग का मान अनंतता $E_D = \infty$ के बराबर होता है। इसे रेखाचित्र संख्या-5 की मदद से इस प्रकार दर्शाया गया है :

रेखाचित्र सं.-5, पूर्णतया लोचदार मांग का वक्र (Perfectly Elastic Demand curve):

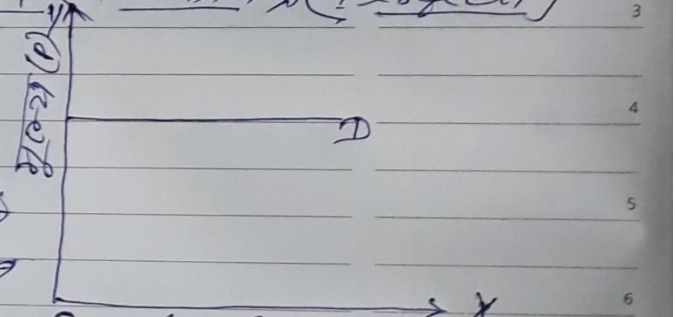

रेखाचित्र संख्या-5 में यह स्पष्ट है कि यहाँ पूर्णतया लोचदार माँग वक्र X-अक्ष के समानान्तर है कारण कि मूल्य में कोई बदलाव नहीं हो रहा है लेकिन माँग में लगातार बदलाव देखा जा रहा है।

अब हम माँग को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा करेंगे (Factors Affecting Elasticity of demand):

माँग की लोच को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं : (1) वस्तु की प्रकृति: किसी वस्तु की लोच उसकी प्रकृति से प्रभावित होती है। भिन्न-भिन्न प्रकृति वाली वस्तुओं की लोच भिन्न-भिन्न होती है, यथा:

(i) जब वस्तु अन्न, सब्जी, फल आदि रोज की जरूरत में से होती है तो इसकी माँग में मूल्य में बदलाव आने से बहुत कम फर्क पड़ता है कारण कि ये सभी चीजें लोगों के रोज उपयोग करने की हैं।

(ii) वहीं जब विलासिता की वस्तु जैसे ए.सी., फ्रीज इत्यादि के मूल्यों में कमी आती है तो उसमें इसकी माँग में बड़ा परिवर्तन देखा जाता है।

P-4

MAY 2020

02

APRIL - THURSDAY

(2) विकल्प की उपलब्धता (Availability of substitute):

बाजार में यदि किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो लोग उसके विकल्प खरीदने शुरू कर देते हैं। जैसे, जैसे पेप्सी की कीमत में वृद्धि होती है तो लोग कोक (coke) खरीदना ज्यादा आसान मानते हैं।

(क) ठीक इसी प्रकार, यदि इसके विकल्प का मूल्य बढ़ जाता है तो ज्यादातर लोग यह वस्तु खरीदना प्रारंभ करेंगे इस प्रकार से मूल्य में थोड़ा भी बदलाव से ऐसी वस्तुओं की माँग में बड़ा परिवर्तन आता है।

(3) उपभोक्ता की आय: जब कम आय वाले लोग किसी वस्तु की कीमत कम होने पर ज्यादा खरीदारी करते हैं, वहीं दूसरी ओर अमीर लोग ज्यादा कीमत पर भी उस वस्तु को खरीद सकते हैं। इस प्रकार, इस वस्तु के किस प्रकार के उपभोक्ता होंगे यह भी इसकी माँग की लोच को प्रभावित करता है।

(4) वस्तु के मूल्य का स्तर: किसी वस्तु का मूल्य किस स्तर पर है उसका प्रभाव भी इसकी लोच पर पड़ता है। यदि वस्तु यदि टी.वी., लैपटॉप इत्यादि तरह की हैं तो इनका मूल्य अधिक होता है। इसके कारण कीमत में परिवर्तन इसकी माँग पर बड़ा प्रभाव डाल सकता है लेकिन यदि वस्तु कम कीमत की है तो कीमत में बदलाव का इसकी माँग पर असर नहीं पड़ेगा।

उपरोक्त विश्लेषण से माँग की कीमत लोच, उसके विभिन्न प्रकार एवं उसको प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों का वर्णन होता है। २

अगली कक्षा में उपभोक्ता बचत (consumer surplus) की चर्चा होगी।